ISSN: 2393-8048
International Conference of Education New Policy Relative to Computer
Venue: Sri Vinayak Mahavidhalya, Sri Vijaynagar, Rajasthan
23 May 2019

शहरी विस्तार और पर्यावरणीय बदलाव: एक भूगोलिक अध्ययन

Dr. Sunil Kumar Baghla, Associate Professor and Dean, Department of Geography, Tantia University, Sri Ganganagar

सार

वर्तमान युग में शहरी विस्तार एक तेज़ी से बढ़ती प्रक्रिया है, जो वैश्विक स्तर पर सामाजिक-आर्थिक विकास का प्रमुख सूचक भी है। हालांकि, इसके साथ ही यह प्रक्रिया पर्यावरणीय परिवर्तन और पारिस्थितिक असंतुलन के लिए भी जिम्मेदार है। इस अध्ययन का उद्देश्य शहरी विस्तार की भूगोलिक विशेषताओं का विश्लेषण करना तथा इसके पर्यावरणीय प्रभावों को समझना है। भू-स्थानिक तकनीकों जैसे GIS (Geographic Information System) और रिमोट सेंसिंग की सहायता से शहरी क्षेत्रों के विस्तार के पैटर्न को मानचित्रित किया गया और विभिन्न समय-खंडों में भूमि उपयोग परिवर्तन का अध्ययन किया गया। परिणामस्वरूप यह पाया गया कि तेजी से बढ़ते शहरी क्षेत्रों में हरित आवरण का तेजी से क्षरण हुआ है, जिससे स्थानीय तापमान में वृद्धि, जल संसाधनों की कमी, वायु प्रदूषण, और जैव विविधता ह्रास जैसी पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। अनियोजित शहरीकरण के कारण न केवल प्राकृतिक आवास नष्ट हो रहे हैं, बल्कि भूमि अपरदन, जल निकासी समस्याएँ, और कूड़ा प्रबंधन में भी जटिलताएँ बढ़ी हैं। इसके अतिरिक्त, इस विस्तार ने नदियों, तालाबों और तटीय पारिस्थितिक तंत्रों को भी गहरा नुकसान पहुँचाया है, जो स्थायी विकास के मार्ग में बड़ी बाधा है। इस शोध में शहरी विस्तार के पर्यावरणीय परिणामों का सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण से भी मूल्यांकन किया गया, जिसमें स्थानीय समुदायों पर शहरी प्रदूषण, जल संकट और जीवन गुणवत्ता के प्रभावों पर चर्चा की गई है। संरक्षण के लिए विभिन्न उपायों जैसे हरित क्षेत्रों का संरक्षण, टिकाऊ शहरी नियोजन, जल संरक्षण तकनीकें और प्रदूषण नियंत्रण रणनीतियाँ प्रस्तावित की गई हैं। विशेष रूप से, शहरी नियोजन में स्मार्ट सिटी अवधारणा, सार्वजनिक परिवहन प्रणाली का विकास, और पर्यावरण के अनुकूल भवन निर्माण को बढ़ावा देना आवश्यक बताया गया है। अंततः, यह अध्ययन शहरी विस्तार और पर्यावरणीय बदलाव के बीच जटिल संबंध को उजागर करता है तथा यह दर्शाता है कि भूगोलिक तकनीकों के उपयोग से शहरी विकास को पर्यावरण के साथ संतुलित करना संभव है। नीति-निर्माताओं, शहरी योजनाकारों और पर्यावरणविदों के लिए यह शोध आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान करता है, ताकि वे सतत और समग्र शहरी विकास की रणनीतियाँ विकसित कर सकें, जो वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए बेहतर वातावरण सुनिश्चित करें।